Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. Semester — III
Phil. CC—10
Contemporary Western Philosophy

1 Bradley: "Appearance and Reality"

Notes / GRB BOOKS

समकालीन पाश्चात्य दर्शन में एफ. एच. ब्रैडले को निरपेक्ष प्रत्ययवाद का प्रवर्तक माना जाता है जिनके प्रत्ययवादी विचार में नवीन हिगलवाद अपनी चरम परिणति को प्राप्त करता है। समकालीन पाश्चात्य दर्शन के विकास को जितना अधिक ब्रैडले ने प्रभावित किया है उतना किसी अन्य दार्शनिक ने प्रभावित नहीं किया है। वस्तुतः Pragmatism, Realism, logical Positivism, Existentialism जितने भी दार्शनिक सिद्धान्त हैं उन सबों का विकास ब्रैडले के Absolute Idealism की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ है। यही कारण है कि समकालीन पाश्चात्य दर्शन में ब्रैडले का स्थान सर्वोच्च माना जाता है। इसके विषय में प्रसिद्ध जर्मन लेखक Rudolf Metz ने लिखा है "He was one of the few great builders of system and one of the boldest and most original and speculative thinkers that Britain has ever produced. In modern British thought he takes a high perhaps the highest rank."

Bradley के दार्शनिक रचनाओं में सबसे महत्वपूर्ण रचना Appearance and Reality मानी जाती है जिसके संबंध में यह कहा जाता है कि यह पुस्तक पाश्चात्य दर्शन के विकास को भावात्मक

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes /

तथा विश्लेषणात्मक दोनों ही कार्यों में प्रभावित किया है। यह पुस्तक पाश्चात्य दार्शनिकों के लिए बहुत बड़ा सिरदर्द बन गया है। इस विषय में Metz ने लिखा है " No other work has so deeply troubled the present day Philosophy of Britain provoked so much reflection, and exercised so much influence both positive and Negative "

के सम्बन्ध में कैयर्ड ने इस पुस्तक के बाद यह कहा है कि कान्ट प्रभावशाली यह पुस्तक सबसे अधिक है। (The greatest thing Since Kant)

के अन्तर्गत अनेक तर्कों का प्रयोग करते हुए ब्रैडले ने उपर्युक्त पुस्तक में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि विश्व के समस्त पदार्थ आभास हैं वास्तविकता की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। आभास की परिभाषा करते हुए ब्रैडले ने कहा है कि आभास वह है जो स्वयं व्याघातक अनुभूति व्याघात है इसके विपरीत अव्याघातक रहित है वह वास्तविकता है चूँकि विश्व के समस्त पदार्थ व्याघातक अनुभूति देते हैं अतः वे सभी के सभी आभास हैं। विश्व के विभिन्न पदार्थ व्याघातक अनुभूति इसलिए देते हैं कि वे आत्मनिर्भर नहीं है। एक की वास्तविकता दूसरों की वास्तविकता पर निर्भर

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

जाती है। फलस्वरूप एक गुण
पर निर्भर करने के कारण से दोषपूर्ण
सत्ता की रचना जाते हैं और उनका
स्वरूप आत्म विरोधी हो जाता है।
आत्म विरोधी होने के कारण ही उन्हें
आभास की कोटि में रखा जाता है।

ब्रैडले वास्तविकता को
एक अविभाज्य व्यवस्थित सम्पूर्ण अनुभव
के रूप में स्वीकार करते हैं, जो अपने
विभिन्न पक्षों को अपने में निहित करता
है और ये पक्ष न तो एक दूसरे से
पृथक हैं और न सम्बन्धित। ब्रैडले का
यह विचार हीगल की वास्तविकता
सम्बन्धी विचार की तरह है लेकिन
दोनों में इस बात का अन्तर है कि
जहाँ हीगल वास्तविकता को बुद्धि या
विचार के साथ एक मानते हैं
और Real is rational and rational
is real सिद्धान्त को मानते हैं वहीं ब्रैडले
वास्तविकता को सिर्फ विचार के साथ ही
एक नहीं मानते बल्कि अनुभव, विचार,
भावना और इच्छा इन तीनों को
समाविष्ट मानते हैं। साथ ही जहाँ हीगल
यह स्वीकार करते हैं कि बुद्धि के
आधार पर वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान
सम्भव नहीं है। इस अर्थ में ब्रैडले को
Anti intellectualist कह सकते हैं।

ब्रैडले ने यह स्पष्ट
करने का प्रयास किया है कि अगर
हम बुद्धि के आधार पर किसी पदार्थ
का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न
करें तो इससे हमें सिर्फ
आभास का ज्ञान होगा।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

क्योंकि किसी भी पदार्थ का भौतिक ज्ञान तभी हो सकता है जब हम उसके बाह्य सम्बन्धों के आधार पर जानने का प्रयास करें। बाह्य सम्बन्ध का स्वरूप अलौकिक तथा आत्म विरोधी होता है। बहुत सारे क्रियात्मक मुख्य गुण और गौण गुण, विशेष तथा विशेषण इत्यादि के बीच में कहते हुए ब्रान्त विकताएँ के आधार को दिखलाने का प्रयास किया है। मुख्य गुण को आभास मान लिया जाता है और वास्तविक गौण गुण को आभास। इसी प्रकार विशेष और विशेषण को मान लिया जाता है। ब्रेडले मुख्य गुण आभास। लेकिन विशेष्य मानते हैं। विशेषण सभी गौण गुण सम्बन्ध के क्योंकि इनके आभास किया जाता है आधार पर बीच बाह्य आत्म विरोधी और अलौकिक अन्तर है।

बाह्य सम्बन्ध को सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। ब्रेडले अलौकिक "क" तथा "ख" दो पद हैं। मान लिया जाय कि उनके सम्बन्ध के रूप में "ग" पाया जाता है, चूंकि बाह्य सम्बन्ध "ग" जिनके बीच "ग" का अस्तित्व "क" के अनुसार "ग" बाह्य होगा। अतः "क" तथा "ख" के बीच एक होगा और "ख" अलग तथा "ग" के बीच एक तथा "ग" सम्बन्ध सम्बन्ध होगा। इस प्रकार

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH

5

Notes

क्या सिद्धि कि और इसकी जाँचेगी और इस प्रक्रिया का नहीं अन्त नहीं होगा। इसमें हम अनावस्था दोष से ग्रसित होंगे और यही अनावस्था का दोष बाह्य सम्बन्ध के स्वरूप को अबौद्धिक बना डालता है। इसप्रकार ब्रेडले ने लिखा है— "The external view of relation is involved in infinite regress and makes relations unintelligible."

बाह्य सम्बन्ध के स्वरूप को अबौद्धिक प्रमाणित करने के बाद ब्रेडले यह प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं इसका स्वरूप आत्मविरोधी भी होता है। यह आत्म विरोधी इसलिए है कि सम्बन्ध के लिए गुण की आवश्यकता होती है और गुण के लिए सम्बन्ध की। दोनों मिलकर एक दोषपूर्ण चक्र की रचना करते हैं जिससे इसका स्वरूप आत्म-विरोधी हो जाता है। दोनों के बीच अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। सर्वप्रथम ब्रेडले ने यह स्वीकार किया है कि गुण के लिए सम्बन्ध की आवश्यकता है। इनके अनुसार "qualities are nothing withought relations."

जबतक हम दो पदार्थों को एक दूसरे के साथ सम्बन्धित नहीं करें तबतक इनके गुणों का ज्ञान सम्भव नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

कि गुणों के लिए सम्बन्धों की आवश्यकता होती है। ठीक इसीप्रकार सम्बन्धों के लिए गुणों की आवश्यकता है क्योंकि सम्बन्ध विभिन्न पदों के बीच निरूपण जाता है और वे पद स्वसम्बन्धित पद होते हैं। गुण ही सम्बन्धित पदों का काम करता है। इसतरह ब्रेडले ने कहा है कि "qualities are supported by relations and reality cannot exist without qualities are related."

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि सम्बन्ध और गुण परस्पर आश्रित होने से दोषपूर्ण चक्र (Vicious circle) की रचना करते हैं जिससे बाह्य सम्बन्ध का स्वरूप आत्म विरोधी हो जाता है। इसप्रकार बाह्यसम्बन्ध के स्वरूप को आत्मविरोधी होने के तथा प्रमाणित करने के बाद ब्रेडल इस निष्कर्ष पर आते हैं कि बाह्य सम्बन्ध के द्वारा हमें सिर्फ आभास का ही ज्ञान हो सकता है वास्तविकता का नहीं। उन्होंने लिखा है "The conclusion to which I am brought is that a relational way of thought must give appearance and not truth."

ब्रेडले ने इस कथन के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि बाह्य सम्बन्ध के आधार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes 1.

पर हमें सिर्फ आभास का ज्ञान होता है। विश्व का कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं जिसका ज्ञान हमें बाह्य सम्बन्ध के आधार पर नहीं प्राप्त करते हैं क्योंकि कोई भी पदार्थ बिना गुण का नहीं हो सकता है और गुण के लिए सम्बन्धों की आवश्यकता होती है चूंकि बाह्य सम्बन्ध का स्वरूप अबौद्धिक तथा आत्म विरोधी भी है अतः इसके आधार पर जिस किसी पदार्थ का ज्ञान प्राप्त किया जायेगा वह भी अबौद्धिक तथा आत्म विरोधी हो जायेगा। चूंकि विश्व के समस्त पदार्थों का ज्ञान बाह्य सम्बन्ध से प्राप्त करते हैं। अतः विश्व का समस्त पदार्थ अबौद्धिक तथा आत्म-विरोधी होने के कारण आभास है इसे वास्तविकता की संज्ञा नहीं दी जा सकती है।

ब्रैडले ने एक-एक करके देश काल कारण-कार्य परिवर्तन क्रियाशीलता इत्यादि की धारणाओं की परीक्षा की है। और यह स्पष्ट कर दिया है कि इन धारणाओं के द्वारा हमें आभास का ही ज्ञान होता है क्योंकि ये धारणायें आत्मविरोधी है। उन्होंने लिखा है कि — " All these categories with which our intellect or thought interprets the world are found to possess self contradictory nature. Hence non of those can be real, they must be mere

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

appearances of reality.

रूप में कह सकते हैं कि इस प्रकार निष्कर्ष के ब्रेडले अपनी पुस्तक Appearance and reality के अन्तर्गत सबसे पहले खण्डनकारी दृष्टिकोण को अपनाते हुए यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बुद्धि के आधार पर हमें सिर्फ आभास का ही ज्ञान मिल सकता है वास्तविकता का नहीं क्योंकि बुद्धि आन्तरिक सम्बन्ध का प्रयोग करती है और बाह्य सम्बन्ध तथा आत्मविरोधी होता है। इसलिए इस अर्थ में ब्रेडले को Anti intellectualist भी कहा जा सकता है।